ज्ञान तत्व 166

(क) प्रधानमंत्री के उपयुक्त व्यक्ति कौन संबंधी प्रश्न और उत्तर।
(ख) ओ.पी. शर्मा जी के वर्तमान भारत की समीक्षा संबंधी प्रश्न और उत्तर।
(ग) कृष्ण देव जी द्वारा बंगजी की आलोचना।
(घ) श्री एस.एस. कुश्वाहा तथा बिन्दु सिंह तोमर द्वारा तिब्बत संबंधी लेख की प्रशंसा और मेरा उत्तर।
(च) शरद साघक जी द्वारा मेरी प्रशंसा और मेरा उत्तर।
(छ) शशांक मिश्र भारतीय द्वारा संघ का समर्थन और मेरा उत्तर।

कार्यालय में प्रश्नों के उत्तर

(क)प्र0— अपने कुछ माह पहले ज्ञान तत्व में लिखा था कि मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह प्रधानमंत्री पद के लिये उपयुक्त व्यक्ति है। किंतु इस अंक में आपने बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को उपयुक्त बताया। वस्तु स्थिति आपकी समझ में क्या है? कौन व्यक्ति इस पद के लिये उपयुक्त है।

उ0—दिग्विजय सिंह जी ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री काल में रामानुजगंज की लोक स्वराज्य व्यवस्था को नक्सलवाद समझकर कुचलने में अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। उस शहर के आम नागरिकों पर ऐतिहासिक अत्याचार हुए जो भविष्य में प्रकाश में आवेंगे। ब्रम्हादेव जी शर्मा ने भी उस समय उनकी मदद की थी। हमें बाद में पता चला कि दिग्विजय सिंह जी और शर्मा जी को गलत जानकारी दी गयी थी और उन्होंने सच्चाई जानने के लिये प्रयत्न नहीं किया जितना करना चाहिये था।

किंतु इन सबके होते हुए भी दिग्विजय सिंह सम्पूर्ण भारत में एकमात्र ऐसे सत्तारूढ़ राजनेता रहे हैं जिन्होंने लोक स्वराज्य की दिशा में भरपूर और तीव्र कदम बढ़ाये। और किसी भी राजनेता ने ऐसे ईमानदार प्रयत्न नहीं किये। इसके विपरीत कुछ ने तो कदम पीछे ही खींचने का काम किया, इसलिये मैंने लोक स्वराज्य के आधार पर उन्हें योग्य बताया।

मैं नीतिश कुमार के विषय में ज्यादा नहीं जानता। पूर्व में रेल मंत्रालय सफलता पूर्वक चला चुके हैं। वर्तमान में बिहार के मुख्य मंत्री है। मैं मई जून में कुछ दिनों के लिये बिहार गया था तब अनुभव किया कि प्रशासनिक आधार पर उनमें ऐसी क्षमता है। लालू प्रसाद जैसे नाटककार कलाकार के समझ किसी का टिकना आसान काम नहीं था। मैंने महसूस किया कि उनमें गुणों का संकलन भी है और संतुलन भी।

मैंने पूरे भारत में अन्य कुछ लोगों का भी आकलन किया। मैंने अनुभव किया कि हरियाणा में काम कर रहे श्री रणवीर शर्मा भी एक ऐसे व्यक्तितत्व हैं जो भारत के प्रधानमंत्री

पद के लिये उपयुक्त हो सकते हैं। उनमें लोक स्वराज्य के प्रति भी पूर्ण निष्ठा है और अनेक गुणों का संकलन संतुलन भी। दुर्भाग्य से वे प्रशासनिक पद पर चंडीगढ़ में डी0आई0जी0 हैं अन्यथा वैसे व्यक्ति इस कार्यो को करके और अधिक समाज सेवा कर सकते है।

दिग्विजय सिंह जी कांग्रेस में हैं और राजनीति की उछल कुद में नजदीक से शामिल भी हैं। नीतिश कुमार जी बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री हैं तथा एन0डी0 में शामिल हैं। रणवीर शर्मा जी एक आई0पी0एस0 प्रशासनिक अधिकारी हैं। जिनके विषय में अभी ऐसा सोचना भी कठिन है।

भारत में मेरा परिचय बहुत सीमित है। अन्य अनेक लोग अधिक योग्य होते हुए भी मेरी नजर से दूर हो सकते हैं किन्तु जब तक की मेरे आकलन के आधार पर मैंने उपरोक्त टिप्पणी की है। आगे क्या होगा या क्या संशोधन होगा यह मैं कहने की स्थिति में नहीं हूॅ। यह तो भविष्य अपने आप ही बताता रहेगा।

(ख)प्रो0 ओ0पी0 शर्मा , एम0बी0बी0एस0 बनारस हिन्दु वि0 वाराणसी यू0पी0

उत्तर – आपने एक साथ इतने प्रश्न उठा दिये हैं कि सबका उत्तर 32 पेज के पुरे ज्ञान तत्व में भी पूरा नहीं होगा मैं आपके कुछ प्रश्नों का उत्तर दे रहा हूॅ। तथा साथ ही आपसे कुछ प्रश्न भी कर रहा हूॅ जो आपकी अमला और योग्यता देखते हुए विशेष रूप से आप पर केन्द्रित है आपके कुछ प्रश्न ये है –

01. गांधी यह देश अहिंसा के राह पर चलकर, भ्रष्टाचार की टानिक पीकर, राजनीति के एन्टी बायोटिक्स के सहारे लम्बे समय तक स्वास्थ्य रह पायेगा क्या?

02. क्या भारत की जनता को स्वराज्य, स्वास्थ्य , शिक्षा आदि के मामले में अपेक्षित लाभ मिला है?

03. क्या भारत में धर्म निरपेक्षता और समाजवाद की प्राप्ति हुई है?

04. क्या क्षेत्रियता के विवादों का समाधान असमान विकास को दूर करके क्यों नहीं किया जा रहा?

05. आपके सीमित प्रयत्न यदि सफल नहीं हो रहे तो ऐसी कसरत का क्या फायदा?

स्वतंत्रता के पूर्व देश, गांधी की अहिंसा को मार्ग मानता रहा किन्तु स्वतंत्रता के बाद देश बिलकुल विपरीत दिशा में चल पड़ा। लोकतंत्र में समाज को हिंसा को छोड़ देना चाहिए, और राज्य को आवश्यकतानुसार हिंसा मार्ग पकड़ना चाहिए। किन्तु हुआ ठीक उल्टा। राज्य ने आवश्यकता से कम हिंसा का मार्ग पकड़ा जिसके परिणामस्वरूप समाज में हिंसा के प्रति समर्थन और विश्वास बढ़ा। गांधी के जाते ही हमारे कायर राज्य नेताओं ने शासकीय बल प्रयोग को भी हिंसा बताना शुरू कर दिया एक मुख्यमंत्री ने तो यहॉ तक गलती की कि उसने हिंसक प्रदर्शन कार्यो पर

गोली चलाने के अपनी ही सरकार के उचित निर्णय को गलत बताकर त्याग पत्र दे दिया था। ऐसी –ऐसी गंभीर भूलें अहिंसा के नाम पर हुई हैं। मैं नहीं कह सकता कि इसमें गांधी के स्वतंत्रता के बाद के अहिंसा की अस्पष्ट अवधारणा थी या बाद लोगों की ना समझी किन्तु इतना बिलकुल साफ है कि स्वतंत्रता के बाद भारत का समाज गांधी के अहिंसा के मार्ग से भटक गया।

इसी तरह यदि राजनीति पर विचार करें तो देश राजनीति के मामले में भी गांधी की पूरी तरह विरूद्ध चला गया। गांधी ने हमेशा लोक नियंत्रक तंत्र का पक्ष लिया था किन्तु गांधी के नाम ही राजनेताओं ने लोक नियुक्ति तंत्र की नई राह बनाई। गांधीवादियों ने तो और कमाल का काम किया कि उन्होंने ग्राम स्वराज्य की परिभाषा ही बदल कर राज्य नेताओं की राह आसान कर दी। जहॉ तक भ्रष्टाचार की बात है तो वह न गांधी मार्ग है, न लोकतंत्र का मार्ग। भ्रष्टाचार कोई मार्ग न होकर वर्तमान राजनैतिक दोष पूर्ण प्रणाली का परिणाम मात्र है। मैं आस्वस्त हूॅ कि भारत अहिंसा की विपरित परिभाषा और गांधी विरूद्ध राजनैतिक प्रणाली के आधार पर लगातार भ्रष्टाचार और हिंसा सहित अनेक समस्याओं के गति में धसता ही जाएगा।

भारत को शिक्षा, स्वास्थ्य आदि। का लाभ तो मिला किन्तु वह उम्मीद से कम रहा क्योंकि जन कल्याण के इन कार्यो में राज्य ने अनावश्यक हस्तक्षेप किया। यदि राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जन कल्याण के कार्य समाज पर छोड़ देता तो अधिक अच्छा होता। राज्य ने वह सब काम जिम्मा ले लिया जो उसका दायित्व नहीं था। परिणाम हुआ कि राज्य सुरक्षा और न्याय के मामले में कमजोर होते चला गया। आप जैसे गंभीर लोग भी शिक्षा और स्वास्थ्य की चिंता कर रहे हैं। जो 11 समस्याओं से अलग है किन्तु आप लोग वास्तवितक समस्ओं पर चर्चा नहीं करते। भौतिक विकास तो हुआ ही है भले ही अपेक्षित न हुआ हो किन्तु 11 समस्याओं में कोई सुधार होना तो दूर की बात रही उल्टे बिगाड़ ही बिगाड़ होता चला गया है। आशा है कि आप इस पर फिर से सोचेंगें।

धर्म निरपेक्षता और समाजवाद भारत कि समस्याओं कि विधि के वृद्धि के मूल आधार बने। धर्म निरपेक्षता समाज का विषय है राज्य का नहीं। राज्य को चाहिए था कि वह व्यक्ति को इकाई मानकर स्वयं धार्मिक मामलों से दूर कर लेता। किन्तु धर्म निरपेक्षता के चक्कर में मुस्लिम राजनेताओं के एक गुट ने मुस्लिम सम्यप्रदायिकता का लगातार समर्थन किया और दूसरे धड़े ने हिन्दू सम्प्रदायिकता का धर्म निरपेक्षता के नाम पर मुस्लिम सम्प्रदायिक और हिन्दु साम्प्रदायिकता का विस्तार ही होता गया जो आज भी जारी है। इसी तरह समाजवाद सब का भी दुरूपयोग हुआ। राजनेताओं ने तानाशाही के लिये बदनाम साम्यवाद को संशोधित और जनाकर्षक नाम समाजवाद दे दिया। समाजवाद को समानता शब्द के साथ इस तरह जोड़ा गया कि समानता शब्द स्वतंत्रता को संकुचित करते जाने के लिये राजनीतिज्ञों के लिये ब्रम्हशास्त्र का काम करने लगा। पिछले साठ वर्षो में लगातार सामाजिक स्वतंत्रता

पर अंकुश लगाया गया। इस अंकुश के लिये हमेशा ही समानता या समता शब्द का उपयोग किया गया। और यह स्वतंत्रता को संकुचित करके राज्य शस्त्रीकरण की सम्पूर्ण कर्मकाण्ड समाजवाद शब्द से परिभाषित किया गया जबकि समाजवाद कि यह सम्पूर्ण प्रक्रिया ही समाज व्यवस्था को कमजोर करके जाने का षडयंत्र होती है समानता ही दूषित परिभाषा साम्यवादी राजनेताओं ने तैयार की थी और समाजवाद की दूषित परिभाषा पश्चिमी देशों के वाम पंथियों ने बनाई थी। भारत में समानता और समाजवाद की परिभाषाऍं सत्ता का समाज की दिशा में अकेन्द्रीयकरण तथा समाज का अधिकाधिक शस्त्रीकरण माना जाता है। जो पश्चिम और साम्यवादी परिभाषाओं से बिलकुल विपरीत है। भारतीय राजनेताओं ने भी सत्ता की भूखा शांत करने के लिये इन दोनो शब्दों का भरपुर उपयोग किया जो आज भी जारी है लगता है कि आप भी ऐसे विकृत अर्थ प्रधान शब्दों के कुछ न कुछ प्रभावित है।

बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे पिछड़े क्षेत्रों का तीव्र विकास न्याय संगत तो है किन्तु क्षेत्रिय टकराव का समाधान नहीं। क्षेत्रिय असमान विकास यदि टकराव का आधार होता तो हरियाण में टकराव पहले हुआ होता। क्योंकि महाराष्ट्र में यदि किसान आत्महत्या जारी है तो उसमें बिहार यू0पी0 वालों का दोष नहीं। टकराव का सिर्फ एक ही कारण है राजनैतिक महत्वकांक्षा। यह महत्वकांक्षा समय–समय पर किसी मुद्दे को टकराव के लिये अपना आधार बनाती है। ये मुद्दे कुल मिलाकर आठ प्रकार के होते हैं। इन्हीं में से बदल–बदल कर कोई एक मुद्दा हवा उछाला जाता है जिसमें दो गुट बनकर समाज को दो ध्रुवों पर केन्द्रित करने का प्रयत्न होता रहता है। इन आठ मुद्दों '' **(1)** धर्म **(2)** जाति **(3)** भाषा **(4)** क्षेत्रियता **(5)** उम्र **(6)** लिंग **(7)** गरीब अमीर **(8)** किसान या उपभोक्ता '' में ही राजठाकरे और लालू पासवान ने अभी क्षेत्रियता को मुख्य मुद्दा बनाने की पहल की है। आज से कुछ माह पूर्व ही आतंकवाद का मुद्दा सबसे अह्म था और उसके पहले महंगाई सबसे उपर था। आपसे निवेदन है कि राजनैतिक मुद्दों के आधार पर अपने को आगे मत लाइये। असमान विकास घातक है इसलिये उनके समाधान का प्रयास होना चाहिए। इस बात से मैं पूरी तरह सहमत हूॅ ।

मैने अपनी सीमित शक्ति के आधार पर जो भी प्रयत्न किये उनमें मुझे कई गुना अधिक सफलता मिली है मैं जानता हूॅ कि आपमें मेरी अपेक्षा कई गुना अधिक बौद्धिक योग्यता भी है और शारीरिक क्षमता भी। आर्थिक मामलों में भी आप बहुत कमजोर नहीं किन्तु आपने अपनी सीमित क्षमता से अधिक कोई उल्लेखनीय सफलता अर्जित की हो ऐसा मुझे पता नहीं। यदि आप मार्गदर्शन देंगें तो मैं उस दिशा में चलने का प्रयत्न करूॅगा। अन्यथा वर्तमान की व्यर्थ समझी जाने वाले कसरत का बहुत लाभ है भी और होगा भी। मैं जानता हूॅ कि आप ज्ञान तत्व के कुछ सशुल्क ग्राहक बनाकर इस व्यर्थ की कसरत की सहायता कर सकते है आप चाहें तो और आगे बढ़कर अपने शहर में एक भाषण का आयोजन रख सकते है। प्रश्न यह नहीं है कि मैं क्या करू। प्रश्न यह है कि कौन ठीक कर रहा है जिसे

दूसरे को सहायता करनी चाहिए वामपथ और दक्षिण पंथ ने देश को कहॉ पहुॅचा दिया है यह आप भी देख ही रहे है। अब उत्तर पंथ की राह पर चले तो अच्छा होगा। आशा है कि आपका उत्तर मिलेगा।

(ग)श्री कृष्ण देव अधिवक्ता मउ. उत्तर प्रदेश

प्रश्न — वाराणसी में एक सम्मेलन में सर्वोदय अपने के अपने अधिकारियों तथा साथियों से विस्तृत चर्चा हुई पता चला कि सेवा ग्राम मे बीस सितम्बर होने वाले बैठक में कई लोगो को जाने से इस लिये रोका गया कि सर्वोदय के लोगो को आप की उपस्थिति पर आपत्ति थी। आप सर्वोदय के साथ जुड़ कर काम करना चाहते है किन्तु सर्वोदय अधिकारियों को आपके ऊपर विश्वास नहीं हैं। क्योंकि संघ से सहानुभूति रखने वाले पर सर्वोदय के लोगो को कभी विश्वास नहीं होता है और आपकी पृष्ठ भूमि संघ के साथ सहानुभूति की रही है।

आप ठाकुर दास जी बंग आर्यभूषण जी भारद्वाज के साथ कुछ नही कर सकेंगे। इससे तो अच्छा होता कि आप एकला चलो कि नीति पर चल पडतें। बहुत से स्वतंत्र साथ मिलेंगे। आपको सर्वोदय के लोग न पहचान पाये है और न पाएंगे।

उत्तरः— मै राजनैतिक रूप से सन् 84 तक समाजवादी विचारो से ओत प्रोत भाव पाई रहा। इससे बाद मैं राजनीति से दूर हो गया। सर्वोदय और संघ मे मैं कभी नही रहा। सर्वोदय के कुछ जिम्मेदार लोगों ने सेवाग्राम सम्मेलन में जाने से अपने लोगो को रोका तो यह आप लोगो का आंतरिक मामला है। मेरी उसमें कोई भूमिका नहीं। सेवाग्राम सम्मेलन ठाकूर दास जी बंग की पहल पर हुआ था। जिसमें से मैं शामिल भी था और सहयोगी भी किन्तु मै उसका पदाधिकारी न पहले था ना बाद में। सर्वोदय के लोग जीवन भर मुझे नही पहचान पायेगें उससे भी मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। आपके अनुसार सर्वोदय के ही कुछ प्रमुख लोगो ने सेवागग्रम सम्मेलन में जाने से रोका। जब सर्वोदय के ही लोग ठाकुरदास जी बंग सरिखे व्यक्तित्व को ठीक से पहचान पाये तो ऐसे लोग मुझे समझेंगे ऐसी उम्मीद मैं तो कभी नहीं किया न ही आपको करनी चाहिये । किन्तु बंग जी या आर्य भषण जी को मै तो अब तक ठीक—ठीक समझ पाया हूॅ। आप क्या समझते है यह मेरा विषय नहीं।

मैं न तो कभी संघ के साथ जुडा रहा न ही सर्वोदय के साथ क्योंकि दोनों का स्वरूप संगठन का है। किन्तु मेरी ऐसी मान्यता है कि संघ और सर्वोदय ने बहुत बडी संख्या अच्छे और समझदार लोग की है। मेरा प्रयत्न है कि सभी अच्छे और समझदार लोग एक साथ बैठकर सामाजिक विषयो पर सोचना शुरू करें। और अब भी नहीं करना है। इसलिये आप एक साथ बैठकर सामाजिक विषयों पर सोचना शुरू करें। मुझे पहले भी नेतृत्व नही करना था। और अब भी नही करना है। इसलिये आप की सलाह मेरे लिये बिलकुल अनावश्यक है। अच्छे लोग एक साथ बैठे संकीर्णता कम हो इतना ही मेरा प्रयत्न है और इस प्रयत्न मे मै पूरी तरह सफल हूॅ।

(घ) श्री एस.एस.कुशवाहा, आगरा,उत्तर प्रदेश

समीक्षाः— आचार्य पंकज जी का चीन संबंधी गंभीर तथा तथ्यपूर्ण लेख पढा। पहली बार तिब्बत संबंधी इतनी बातें साफ हुई है। ज्ञान तत्व लगातार अपनी सार्थकता बढाता जा रहा है। मै कुछ सहयोग नहीं कर पाया। कैसे सहयोग करूॅ यह समझ नहीं पा रहा।

श्री रवीन्द्र सिंह तोमर, संवाद सरोवर, गुना ,म0प्र0

आचार्य पंकज जी ने तिब्बत संबंधी जो लेख उसके निष्कर्षो पर और गंभीर विचार करने की जरूरत है। भारत द्धारा दलाई लामा को शरण देने के कारण भारत चीन युद्ध हुआ ऐसी सोच सही नहीं है। इस युद्ध में कृष्ण मेनन की भूमिका ठीक नहीं थी। साम्यवादियों के भीतर घात से नेहरू जी का दिल टूट गया था। वे स्वप्न में भी नहीं सोचते थे कि चीन ऐसा भी कर सकता है। चीन ने भारत पर आक्रमण अमेरिका विरोध के कारण नहीं किया था बल्कि रूस से विरोध के कारण किया था क्योंकि चीन की नजर में भारत रूस का विस्तृत साथी था और चीन रूस का सबसे बड़ा प्रतिद्धंदी।

अजेय तिवारी के लोकसभा अध्यक्ष संबंधी विचारों से मैं असहमत हूॅ। सोमनाथ चटर्जी के संबंध में साम्यवादियों की सोच गलत है। अध्यक्ष बन जाने के बाद उससे अध्यक्ष रहते तक दलीय निष्ठा की उम्मीद ही करना गलत है। यदि जनसत्ता वाले लेख पर बहस चलाते तो और अच्छा होता।

उत्तरः— आचार्य पंकज जी के तिब्बत संबंधी लेख के पक्ष विपक्ष में गंभीर प्रतिक्रियाऍ प्राप्त हुई है। वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर जी राम ने फोन पर बताया कि श्री पंकज जी के ये निष्कर्ष गलत भी है और अनुचित तथा अनावश्यक भी। कुछ पाठकों ने ऐसे लेख देश को नुकसान पहुॅचाने के कारण न छापने की सलाह दी। कुछ दूसरे पाठकों ने लेख की भूरि—भूरि प्रशंसा की। कुछ साथियों ने तो यहॉ तक कहा कि हमारे मन में तो ज्ञान तत्व की साम्यवाद विरोध छवि बनी रही। आप साम्यवाद की आलोचना ही किया करते थे प्रशंसा नहीं। पहली बार ज्ञानतत्व में साम्यवादी चीन की इतनी मौलिक प्रशंसा पढ़कर आश्चर्य हुआ। कुछ पाठकों ने लिखा कि आचार्य पंकज जी ने यह लेख लिखकर बहुत हिम्मत का काम किया है। सर्वोदय के लोगों को भी अपनी स्थिति साफ करनी चाहियें और संघ वालों को भी। कुछ पाठकों ने तो इस लेख के लिये आचार्य पंकज, ज्ञानतत्व तथा साथ—साथ मुझे भी धन्यवाद तक दिया है।

यह लेख भी बहुत गंभीर है और प्रतिक्रियाऍ भी एक पक्षीय न होकर मिली जुली है । प्रतिक्रियाऍ दो प्रकार की होती है — **(1)** वैचारिक **(2)** भावनात्मक। ऐतिहासिक विषयों पर

भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का कोई महत्व नहीं होता और वैचारिक प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये बहुत विद्धता चाहिये। जो भी प्रतिक्रियाएँ मिली उसमें से एक भी प्रतिक्रिया वैचारिक नहीं थी।

किसी तिब्बती धर्म गुरू या विज्ञान तक तो ज्ञान तत्व पहुँचा नहीं होगा किन्तु सर्वोदय और संघ के विद्धानों तक तो अवश्य ही पहुँचा है। इनकी वैचारिक चुप्पी अवश्य ही आश्चर्य जनक है। प्रोफेसर रामजी सिंह जी तो स्वयं इस प्रस्ताव के प्रस्तावक ही थे। ज्ञानतत्व का यह लेख पढ़ लेने के बाद मैं उनसे पुणे में मिला भी तो समय के अभाव में कोई चर्चा नहीं हुई। अब भी हम लेख के यथार्थ पर उनके विचारों की प्रतीक्षा कर रहे है। मेरी प्रबल इच्छा है कि यथार्थ हो समाज के समक्ष अवश्य ही आना चाहिये चाहे वह सर्वोदय प्रस्ताव का यथार्थ हो अथवा पंकज जी के रहस्य उद्घाटन का। ज्ञानतत्व ऐसे वैचारिक यथार्थ को समाज तक पहुँचाने की ईमानदार भूमिका निभाता रहेगा।

इस लेख की प्रशंसा करने वालों की संख्या आलोचना करने वालों की अपेक्षा कई गुना अधिक थी। प्रशंसा के पत्रों के उत्तर देने का कोई अर्थ नहीं। आलोचना के पत्रों में से कोई वैचारिक पत्र होता तो उत्तर पंकज जी देते। वैसा है नहीं। आलोचनाएँ भावनात्मक है जिनका उत्तर मुझे देना चाहियें।

पहली बात तो यह है, कि मैं न साम्यवाद विरोधी रहा न ही पक्षधर यदि साम्यवाद समाज में समानता की प्रयत्न करे तो मैं उसका पूरी तरह समर्थक हूँ और यदि साम्यवाद राजनैतिक सत्ता संग्रहण या एकत्रीकरण के लिये समानता शब्द को शस्त्र के रूप उपयोग करना चाहता है तो मैं पूरी तरह विरोधी हूँ। वर्तमान राजनैतिक सत्ता के केन्द्रीयकरण के विरूद्ध छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में आवाज उठाने के कारण मुझे नक्सलवादी घोषित करके पूरे शहर पर जो प्रशासनिक आक्रमण और अत्याचार सन् छियानवे की दिग्विजय सिंह सरकार ने किया था उसका केन्द्र बिन्दु मैं ही था। उस समय साम्यवादियों तथा सर्वोदय के बंग जी अमरनाथ भाई सिद्धराज जी आदि ने भरपुर साथ दिया था दूसरी ओर सभी संघ प्रमुख ,ब्रहमदेव जी शर्मा,यशपाल मित्तल आदि ने हमारे विरूद्ध सरकार की मदद की थी। उस समय के केन्द्रीय गृहमंत्री इन्द्रजीत जी गुप्त ने मेरे लिये दिग्विजय सिंह जी को चिट्ठी लिखी थी बाद में सन् दो हजार में मैं जब नगरपालिका अध्यक्ष चुना गया और मैंने राजनैतिक सत्ता के विकेन्द्रीयकरण का सफल प्रयोग रामानुजगंज में किया तब साम्यवादी और सर्वोदय के साम्यवाद समर्थक मुझसे नाराज होते चले गये और लोक स्वराज्य समर्थक साथ हो गये। ब्रहमदेव जी शर्मा ने भी यथाथ्र को समझा। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि न मैं साम्यवाद विरोधी था न हूँ। मैं राजनैतिक सत्ता और आर्थिक सत्ता के विकेन्द्रीयकरण का पक्षधर हूँ भी और रहूँगा भी। इनमें से भी मैं राजनैतिक सत्ता के विकेन्द्रियकरण को आर्थिक सत्ता के केन्द्रीयकरण से अधिक घातक मानता हूँ। मैंने अपने निकटस्थ साथी रोशनलाल अग्रवाल के आर्थिक सत्ता के विकेन्द्रीयकरण वाले प्रयत्नों से इसीलिये दूरी बनाई क्योंकि मुझे उसमें सत्ता के विकेन्द्रीकरण की कोई बात नहीं दिखी। आचार्य पंकज जी के द्वारा भी आर्थिक सत्ता के विकेन्द्रीयकरण वाले सुझाव ज्यादा जोर दिखने के कारण मैं कुछ शतर्कता पूर्वक विचार करने लगा हूँ। मुझे अपने मित्रों के आर्थिक सोच में से एक प्रश्न का उत्तर चाहिए कि

अर्थ का राज्य के पास एकत्रिकरण अधिकघातक होगा कि पूजीपतियों के पास। मेरे मित्र राज के पास एकत्रिकरण को घातक मानते ही नहीं। मैं अर्थ के कहीं भी केन्द्रीयकरण को घातक मानता हूॅ। क्योंकि उसके पास सेना पुलिस संविधान कानून और न्याय तक की ताकत तो है ही अर्थ की ताकत भी वहीं इकट्ठा हो जावे यह उचित नहीं यही पर मेरा कुछ मित्रों से मतभेद है जिनमें साम्यवाद भी शामिल है और नक्सलवाद भी।

आर्थिक मामलों में मैं संघ परिवार की ज्यादा चर्चा नहीं करता क्योंकि अर्थ व्यवस्था के विषय में उनकी मौलिक सोच शुन्य है। ये लोग राजनैतिक सत्ता के तो केन्द्रीयकरण की बात करते है किन्तु आर्थिक सत्ता के मामले में ढुलमुल हैं। आर्थिक मामलों में इनके थिंक टैंक गुरू मूर्ति जी हैं। ये भी स्पष्ट नहीं है कि आर्थिक विषमता दूर करने में शारीरिक श्रम मूल्य की क्या भूमिका है और कृत्रिम ऊर्जा श्रम सहायक है या प्रतिस्पर्धी। इसलिए अर्थनीति के मामले में मैं इनसे संवाद नहीं करता। मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूॅ कि साम्यवाद का मैं आंख मूदकर विरोध नहीं करता यदि कोई वैचारिक बात होगी तो उसकी समीक्षा तो होगी ही।

दूसरी बात है राष्ट्रवादी सोच की प्रत्येंक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपनी क्षमता की सीमाएं तय करके ही कार्य क्षेत्र तय करें। एक बार इस प्रश्न पर गंभीर विचार मंथन हुआ था कि ''एक अपराधी मेरे धर में आकर छिप जाता है जिसे हमारे परिवार का मुखिया छिपा लेता है। थोड़ी देर बाद पुलिस आकर मुझसे पूछती है और मैं यह भी जानता हूॅ कि वह व्यक्ति अपराधी है और यह भी कि उसे परिवार के मुखिया ने छिपाया है। परिवार व्यवस्था के अनुसार मुझे पुलिस के समक्ष झुठ बोल देना चाहिए किन्तु राष्ट्रीय व्यवस्था के हित में मुझे पुलिस के समक्ष सच बता देना चाहिए ।'' इस प्रश्न का उत्तर खोजने में लम्बा विचार मंथन हुआ था और अंत तक कोई सर्व सम्मत नतीजा नहीं निकल पाया। मेरे विचार में यहां अपनी क्षमता परिवार तक है तो मुझे आंख मूंद कर मुखिया की सलाह माननी चाहिए और यदि वह सलाह गलत भी हो तो उसे मानने में मैं व्यवस्था के साथ होकर कोई गलत काम नहीं कर रहा। किन्तु यदि मैं परिवार से ऊपर कुछ सोचने विचारने की क्षमता रखता हूॅ तो मुझे अपने मुखिया के समक्ष विरोध करना चाहिए। यदि फिर भी मुखिया न माने और मामला बहुत गंभीर है तो हमें मुखिया की बात न मानते हुए न्याय का साथ देना चाहिए। ठीक यही बात राष्ट्र और विश्व के संबंधों के बीच भी है। यदि आपकी क्षमता राष्ट्र से ऊपर सोचने की नहीं है तो राष्ट्र आपके लिए अन्तिम इकाई है चाहे उसकी प्रमुख का निर्णय सही हो या गलत। किन्तु यदि आपकी क्षमता राष्ट्र के ऊपर तक विचार करने की है तो आपको अवश्य ही ऐसे प्रश्नों पर अपनी स्पष्ट राय रखनी चाहिए। मैंने अपनी स्वयं की क्षमता का आंकलन करके अपनी सीमाएं राष्ट्र से भी ऊपर की मान ली है। इसका अर्थ वह कि यदि भारत की शासन व्यवस्था पाकिस्तान या किसी अन्य विदेश सत्ता के साथ अन्याय करती है तो मुझे ऐसे अन्याय के मामले में ऐसी राष्ट्रीय व्यवस्था के विरूद्ध अपनी आवाज उठानी चाहिए। सबसे पहले यह तय करना आवश्यक है कि मेरी स्वयं की क्षमता क्या है? परिवार के पक्ष में काम करना एक अलग प्रश्न है और विचार करना अलग। इसी तरह राष्ट्रीय मामलों में भी राष्ट्र के निर्णय के साथ खड़ा होना अलग बात है। और बाद में समीक्षा अलग आचार्य पंकज जी ने क्रियात्मक रूप से भारत सरकार के निर्णय के विरूद्ध कुछ किया नहीं है उन्होंने तो मात्र भारत के निर्णय की समीक्षा मात्र की है। यदि

भारत का निर्णय गलत है तो उस निर्णय को गलत कहना ही राष्ट्रीयता है। भूल से हम सरकारों के गलत निर्णय की समीक्षा को भी अपनी भावना के साथ जोड़ लेते हैं। मेरे विचार में पंकज जी के लेख का भावनात्मक विरोध गलत है। इस संबंध में और विचार आयेंगे तब विचार होगा।

रवीन्द्र सिंह जी ने सोमनाथ जी चटर्जी पर साम्यवादी प्रहार को गलत बताते हुए मेंरे विचारों का समर्थन किया है। इसलिए मैं उस पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता मैं अब भी मानता हूॅ कि साम्यवादियों ने सोमनाथ चटर्जी के संबंध में जो तर्क प्रस्तुत किये वे दलीय संकीर्णता के परिचायक है। व्यक्ति जब किसी संगठन का सदस्य बन जाता है तब वह उक्त सगठन के अनुशासन से बंध जाता है। साम्यवाद एक संगठन है यह बात सच है किन्तु लोक सभा साम्यवादी संगठन से भी एक बड़ा संगठन है जिसकी मर्यादाओं की सुरक्षाकाल साम्यवादियों का भी कर्तव्य है सोमनाथ जी अपने व्यक्तिगत निर्णय के आधार पर उसी पक्ष में वोट देते है तो वह कोई गलत काम नही था। यदि वे दलीय विचारधारा के परिपेक्ष्य में भी वोट देते तो चलता किन्तु वे दलीय अनुशासन के कारण वोट दें यह बिल्कुल गलत निर्णय होता है। किन्तु साम्यवादी पार्टी ने उनकी तटस्थता तक पर भी अपनी अनुशासन के डण्डे से आघात किया। यह भारतीय राजनीति के लिए एक खतरनाक संकेत है। आशा है कि इस पर और चर्चा होगी।

(च) श्री शरद साधक जी राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष आचार्य कुल वाराणसी

आपके जन्म दिवस 25 दिसम्बर 08 पर हो रही विचार चर्चा की सफलता के लिए मंगल कामना स्वीकार करें।

आज 09 नवम्बर को देवोत्थान एकादशी पर आयोजित जय जगत सेवा संस्थान संगोष्ठी में शामिल रचनात्मक संस्थाओं ने चर्चा को चर्चा बनाने के लिए लोक स्वराज्य अभियान के सेवा ग्राम प्रस्ताव की प्रासंगिकता स्वीकार की है तथा देश के नीति नियामकों से खुली अपील की है कि जब करोड़ों को गुजारे के लिए प्रतिदिन 10 से 20 रूपया भी मुश्किल से मिलता है तो उनकी या उनके या प्रतिनिधि होने का दावा करने वाले शासन –प्रशासन कर्मियों की तन्ख्वाह आम आदमियों की आपसे 20 गुना से ज्यादा रखकर लोकतंत्र को तेजोहत न किया जाये। इनके लिए ऐसा कानून बनाया जाये कि संसद या विधान सभाएं भी वेतन भत्तों में मनमानी सिद्ध कर लोक मानस को उद्धालित करने से बचें।

सर्वोच्चता प्रतिस्पर्धी को रोकने के लिए दिखावटी तामझाम से अधिक साद्गी अपनाने का प्रतिष्ठा देने से ही व्यवस्था परिवर्तन का श्रीगणेश हो सकता है। योगोन्मुखी राष्ट्र, राज्य, धर्म और समाज की योगोन्मुखी करने का शुभारम्भ आपके जन्म दिवस पर होने से सार्वजनिक जीवन प्रभावी हो सकेगा। 25,26 दिसम्बर को आन्दोलन अभियान में भाग लेने पहुॅचे सभी मित्रों

के अभिवादन के साथ स्नेहाधीन, क्रियाहीन, ज्ञानी और क्रियावान अज्ञानी व्यवस्था परिवर्तन में सहायक नहीं हो सकते इस पर गम्भीरता से विचार कीजियेगा।

ज्ञान तत्व 163 में प्रकाशित

भारतीय संविधान समीक्षा तथा संकट में कौन जैसी स्पष्ट और विचारों तेजक टिप्पणियों के लिए बधाइ ।

उत्तर — मैं महसूस करता था कि आप स्वप्रेरणा से इस प्रस्ताव पर सहमति देंगे। आपने और आगे बढ़कर हमारे प्रस्ताव पर चर्चा की। इससे हमारा उत्साह बढ़ा है अब तक किसी अन्य ने स्वप्रेरणा से इतनी सक्रियता तत्परता नहीं दिखाई है।

आपने ज्ञानहीन सक्रियता और ज्ञानवान निष्क्रियता के संकट की चर्चा की है। यह समस्या है इसलिये तो हमें इतनी ज्ञान सहित सक्रियता की चिंता करनी पड़ रही है। अन्यथा यह उम्र तो आप जैसे अस्वस्थ बुजुर्ग के आतम करने का समय था। इस उम्र में भी आप इतने सक्रियता आवश्यक समझ रहें हैं यह ज्ञान ही सक्रियता तथा ज्ञानवान निष्क्रियता का परिणाम है। वर्तमान समय में ज्ञानहीन सक्रियता ज्यादा बढ़ रही है। ज्ञानवान लोगों का या तो अभाव हो रहा है या चुपचात हैं ज्ञानहीन सक्रिय लोग ज्ञानवानों से ही मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं यही हमारी परम्परा रही है। दुर्भाग्य से ज्ञान का स्थान बुद्धि में ले लिया और बुद्धि त्याग छोड़कर स्वार्थ की ओर चल पड़ी ऐसे स्वार्थी तत्व ही राजनेता या गुरू बनकर समाज के मार्गदर्शक बन बैठे और ऐसे मार्गदर्शकों को ही समाज ने ज्ञानी घोषित कर दिया। परिणाम स्वरूप समाज ऐसे तत्वों के पीछे चलने लगा।

हम आप जैसे लोगों के समक्ष दोहरी जिम्मेदारी है कि ज्ञानवान लोगों को सक्रिय किया जाये और सक्रिय लोगों को ज्ञान की दिशा में मोड़ा जाये। यह काम हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। किन्तु है यह काम बहुत कठिन। क्योंकि ज्ञानवानों की भूमिका राजनेताओं तथा पेशेवर साधु संतों ने ग्रहण कर ली है। ये लोग ज्ञानहीन सक्रिय लोगों को और अधिक सक्रियता का मार्ग बता बताकर लगातार उनका शोषण कर रहे है। इस समय मुख्य समस्या निष्क्रियता नहीं है जैसा कि बार–बार दोहराया जाता है कि विचार तो बहुत हो चुका। अब विचार की नहीं बल्कि सक्रियता की जरूरत है परिणाम होता है कि ज्ञान ही लोगों को सक्रिय करने का प्रयास शुरू हो जाता है। उस समय ऐसे ज्ञानहीन सक्रिय लोगों की संख्या 99 प्रतिशत हो चुकी है जिन्हें धूर्त लोग अधिक सक्रिय होने के लिए भेड़–बकरियों की तरह हांक रहे हैं। ज्ञानवान लोग या तो निराश हैं या निष्क्रिय।

आपने भी पूरा अनुभव किया है और मैंने भी। एक ओर तो कुछ लोग अहिंसा का ऐसा अतिवादी पाठ पढ़ा रहे हैं जो समाज को कायरता की ओर प्रेरित कर रहा है । दूसरी ओर कुछ लोग हिंसा का ऐसा अतिवादी पाठ पढ़ा रहे हैं कि समाज में अनावश्यक बल प्रयोग पर विश्वास बढ़ता जा रहा है। दोनों ही प्रयत्न एक साथ और पूरी ताकत से चलाये जा रहे है।

एक ओर तो समाज की संपूर्ण अर्थव्यवस्था को राज्य या सरकार केन्द्रित बनाने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं और उस प्रयत्न को नाम दिया जा रहा है समाजवाद या साम्यवाद। मैं आज तक नही समझ पाया कि यह कैसा समाजवाद है जिसमें समाज के संपूर्ण आर्थिक संसाधनों पर राज्य का एकाधिकार है। दूसरी ओर संपूर्ण आर्थिक संसाधनों पर पूंजीपतियों के एकाधिकार की भी बात लगातार बढ़ रही है। यह पूंजीवाद भी कितना खतरनाक है कि उसने श्रम को पूरी तरह असहाय बना दिया है। दोनो ही दिशाओं में बंट कर समाज सक्रिय है और ऐसे विभाजित समाज को ही और विभाजित करके सक्रिय करने की सक्रियता जारी है।

इसलिए मेरा प्रयत्न दो दिशाओं में चल रहा है। पहला ज्ञान तत्व के माध्यम से विचार मंथन में समाज को कोई विचार नहीं दे रहा और न ही सक्रियता का पाठ पढ़ा रहा हूॅ तो 99 प्रतिशत सक्रिय अतिसक्रिय लोगों को कह रहा हूॅ कि उनको और विचार मंथन शुरू करो। अतिवादियों के बहकावे में आकर कुछ भी करना घातक है। सब प्रकार के लोग एक साथ बैठकर विचार मंथन की आदत डालो। दूसरी ओर मैं ज्ञान वालों को कह रहा हूॅ कि राजनीति पर अंकुश के लिए एक आंदोलन शुरू करना आवश्यक है। ऐसे आंदोलन की शुरूआत राजनेताओं द्वारा स्वयं ही अपने वेतन भत्ते बढ़ाने के अधिकार से हो। राजनेताओं के इस अधिकार को चुनौती देने की शुरूआत राष्ट्रपति को प्रतीक बताकर उसके वेतन भत्तों से की जाये। हम राष्ट्रपति को प्रेरित करें कि वे हमारे इस आंदोलन में शामिल होकर अपने वेतन भत्तों की कटौती से आंदोलन की शुरूआत करें। यदि राष्ट्रपति सहमत न हो तो हम उन्हें अहिंसक सत्याग्रह द्वारा इस दिशा में मजबूर कर दें इस तरह यदि ज्ञानी लोग कुछ सक्रिय होते हैं और सक्रिय लोग रूककर विचार मंथन शुरू करते है तो सम्भव है कि धूर्त लोगों पर कुछ अंकुश लग जाये। आप इस दिशा में स्वस्थ चिंतन भी कर रहे हैं और सक्रिय भी हैं । यह बहुत अच्छी दिशा है।

(छ).श्री शशांक मिश्र भारती, रा.ई. कॉलेज , दुबौला, रामेश्वर, पिथौरागढ़ 262529

ज्ञानतत्व एक सौ इकसठ में अपने भारत की गुटनिरपेक्षता पर बहुत सार्थक और सटिक टिप्पणी की है। प्रश्नोत्तर भी ठीक है। किन्तु अपने सिमी संघ और नक्सलवाद को एक साथ रखा यह उचित नहीं। सिमी और नक्सलवादी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं किन्तु संघ कभी ऐसा नहीं रहा। सिमी और नक्सलवादी तो राष्ट्र विरोधी विदेशी तत्वों से साठगांठ तक करते पाये जाते हैं।

उत्तर – मैं आपसे सहमत हूॅ कि सिमी और नक्सलवादी राष्ट्र विरोधी तत्वों से भी मिले रहते है किन्तु संघ के विषय में ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता। संघ में राष्ट्र भक्ति का पाठ पढ़वाया जाता है। जब देश पर संकट आता है तब संघ के लोग अन्य किसी भी संगठन की अपेक्षा अधिक आगे रहते है। इन सब गुणों का जानते समझते हुए भी मैंने संघ सिमी और नक्सलवाद को एक श्रेणी में रखा है क्योंकि मेरी कसौटी में राष्ट्रवाद को सर्वोच्च

स्थान प्राप्त नहीं है। मेरी कसौटी में समाज सर्वोच्च है और इस कसौटी तीनों की गतिविधियों लगभग एक समान है। तीनों ही समाज के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते। सिमी इस्लामिक विश्व को ही समाज के रूप में देखता है। कुरान को ही समाज पर धर्म ग्रन्थ के रूप में थोपना चाहता है। वह मुस्लमानों को आश्वस्त करता है कि वही एक मात्र उनका शुभ चिंतक है। नक्सलवाद को ही समाज की कोई परवाह नहीं। समाज के सभी संसाधन राज्य के अंतर्गत लाकर समाज को गुलाम बनाना ही उसका आदर्श है। मानों भले ही चीन से बेदखल हो चुके हों किन्तु उनके नाम पर उनके चेले भारत में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे। संघ परिवार भी समाज के अस्तित्व को नकार कर राष्ट्रवाद को ऊपर उठाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहा। यदि दुनिया में भारत के अलावा कहीं और भी हिन्दु राष्ट्र रहा होता तो संघ के राष्ट्रवाद की पोल खुल जाती। जब तक नेपाल में राजशाही रही तब तक संघ परिवार ने नेपाली व्यवस्था या संघ परिवार तीनों ही समाज को गुलाम बनाकर रखना चाहते है। तीनों समाज की परिभाषा बदल रहे हैं व्यवस्था को कमजोर कर रहे हैं औंर अपनी व्यवस्था को थोप रहे है ।

तीनों में दूसरी समानता यह है कि तीनों ही सामाजिक हिंसा को प्रोत्साहित करते है । समाज के विभिन्न समूह मिल बैठकर अपनी समस्याओं का समाधान खोजें यह इन्हें मंजूर नहीं। मैंने कुछ माह पूर्व एक लेख में लिखा था कि सिमी आतंकवादी गुट है और संघ या नक्सलवाद उग्रवादी। सिमी असंबद्ध नागरिकों तक की हत्या करता है जो नक्सलवाद का चरित्र है जो न संध परिवार का। भारत के आम मुसलमानों ऐसे आतंकवादियों के प्रति समर्थन उन्हें इस श्रेणी में ला खड़ा करता है। इसी तरह भारत के वामपंथी भी नक्सलवादी उग्रवाद का समर्थन करने के कारण बेदाम नहीं है। अब आप ही बताइयें कि प्रज्ञा पुरोहित आतंकवाद को संघ परिवार के समर्थन के बाद मैं संघ को उग्रवाद समर्थक कहूं या आतंकवाद समर्थक। सिर्फ हिन्दु एकत्रिकरण द्वारा सत्ता पर कब्जा करके समाज के सारे अधिकार समेटने की लालच में इन्होंने आतंकवाद तक की वकालत करनी शुंरू कर दी। अब तक मैंने संघ को आतंकवाद के साथ कभी नहीं जोड़ा किन्तु अब जोड़ने की मजबूरी दिखने लगी है। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूॅ कि संघ कि नीतियां न हिन्दुत्व को बचा पायेंगी न विश्व शांति को। हिंसक इस्लामिक चरम पंथ और हिंसक सत्तालोलुप नक्सलवाद से मुकाबला करने के लिए प्रबल विश्व जनमत की जरूरत होगी। इसके लिए तात्कालिक प्राथमिकताएं कुछ समय के लिए रोकनी होंगी। अल्प संख्यक शांतिप्रिय मुसलमानों को बहुसंख्यक हिंसक मुस्लिम प्रवृत्ति से सुरक्षा देनी होगी। दुर्भाग्य से संघ इस विश्व एकत्रीकरण में बाधक बन रहा है । प्रज्ञा पुरोहित प्रकरण को संघ के समर्थन ने मेरे पुराने संदेहों को पुष्ट किया है कि हिंसा हमेशा ही सुरक्षा कम और गुलामी ज्यादा देती है। सभी हिंसक संगठन छोटी–छोटी सफलताओं का ऐसा गुणगान करते है जैसे कि उन्होंने कोई खास काम कर दिखाया है। मैं गावों में यात्रा करते समय अक्सर पाता हूॅ कि जब कोई जीप गांव की सरहद से पार होती है तो गांव का पहरेदार कुत्ता जीप को पूरी ताकत से तब तक दौडता है जब तक वह जीप सीमा पर न चली जाये। कुत्ते की स्वामी भक्ति पर संदेह नहीं किन्तु इस कुत्ता भौंक दौड़ से सुरक्षा संभव नहीं। कुत्ता लौटकर इतना थक जाता है कि वह आराम भी करता है और अपनी पीठ भी थपथपाता है कि उसने गाड़ी को भगाकर ही छोड़ा। लगता है कि हमारा आतंकवाद विरोध भी उसी दिशा में जा

रहा है। संघ चाहे जितना प्रयत्न कर ले किन्तु वह इस्लाम की हिंसक मनावृत्ति को हिंसा के समर्थन से लाभ नहीं पहुंचा सकता। क्योंकि हिन्दू न कभी सम्प्रदायिक संकीर्ण हिंसक हुआ है न होगा। और यदि होने भी लगेगा तो हम लोग उसे हाने में पूरी – पूरी बाधा पैदा करेंगे चाहे हमारी हालत कुत्ते के समान क्यों न हो जाये। इस समय विश्व शांति के लिए खतरे के रूप में दो प्रकार के आतंक के चेहरे दिख रहे हैं। **(1)**इस्लामिक आतंकवाद **(2)** नक्सलवादी उग्रवाद। दोनों का मुकाबला सामाजिक एकता से ही संभव है, राष्ट्रीय एकता से नहीं क्योंकि अब विश्व छोटे–छोटे टुकड़ों में स्वतंत्र नहीं है। यह यदि विश्व जनमत में अपनी भूमिका नहीं निभा सकते तो हम अपने – अपने गॉव शहर में तो हिंसा उग्रवाद आतंकवाद के विरूद्ध लहर पैदा कर ही सकते है।

तीसरी समानता यह है कि संघ भी सत्ता संघर्ष में अंदर तक चिपटा हुआ है जैसा मंसूबा इस्लामिक चरम पंथियों का या नक्सलवादियों का है तीनों ही राजनीतिक खेल खेल रहे हैं। तीनों को विदेशी धन से परहेज नहीं है। दो को विदेशी सरकारें धन देती है तो एक को विदेशी हिन्दू। तीनों के लिए स्वदेशी, हिन्दूत्व या इस्लाम या श्रम जीवि गरीब आदि शब्द सिर्फ सत्ता के माध्यम मात्र है। इससे अधिक कुछ नहीं। यदि संघ इतना ही हिन्दू प्रिय है तो वह मिल जुलकर आतंकवाद और हिंसा के विरूद्ध योजना बनाता है? क्यों हिंसा का समर्थन करने लगता है? मेरे विचार में तीनों की सोच एक है कि किसी समाज को एकजुट होने से रोका जाये।

अंत में मैं आपसे कहना चाहता हूॅ कि मै राष्ट्र भक्ति के विरूद्ध नहीं। किन्तु इस समय इस्लामिक आतंकवाद के विरूद्ध साझा रणनीति की जरूरत है जिसमें संघ परिवार की उग्रता बाधक बन रही है ऐसा मेरा सोच बना है।